रात्रि क्लास 17/9/1964 :– यज्ञ की सर्विस में थकावट (नहीं) होनी चाहिए, और ही ताकत मिलती जाती है। हर एक का(र्य) में कमाई तो ज़रूर है। सब ईश्वरीय सर्विस में हैं। आसुरी सर्विस में 8 घण्टा, तो ईश्वरीय सर्विस में (12) घंटा; क्योंकि बाप बहुत अच्छा इज़ाफा देते हैं। गाया हुआ है– (दधीचि) ऋषि ने हड्डी भी दे दी। सन्यासियों को इतनी सर्विस नहीं करनी पड़ती है। तुमको तो तन–मन–धन से बहुत सेवा करनी है। सन्यासी तन की तो कर (नहीं) सकेंगे। कर्म सन्यासी होने कारण कर्म करने की दरकार नहीं। तो सर्विस का मार्क्स बहुत है। बहुतों को सुख मिलने से उनको आशीर्वाद जा(ती) है। सर्विस अच्छी करते हैं तो महिमा भी अच्छी होती है। कहते हैं, ऐसे पर तो बलिहार जावें। ऐसे बाप से मिलता भी बहुत है। भारत को पवित्र, सुखी, शान्त बनाना, ये भी तु(म्हारी) मेहनत है। जितना शान्त में रहते हो उतना शान्ति फैलाते हो। दुनिया को बुलाने(भुलाने) में मेहनत लगती है। शरीर का भान भूल जावें। (तो) अपन को आत्मा समझ बाबा को याद करते रहें तो बहुत कल्याण है। राजयोग की पढ़ाई है बड़ी सिम्पुल। एक ही इम्ति(हान) है। बाप ने बड़ा अच्छा समझाया है। बाप को पहचान बाप के बनें तो जीवनमुक्ति ज़रूर मिलेगी। बड़ा सहज, सिम्पुल है। शरीर निर्वाह के लिए तो सबको टाइम चाहिए। सर्व दुखों की कम्प्लेन सुनने वाला एक है। कम्प्लेन करना भक्ति है। भक्ति करना भी कम्प्लेन करना है। भक्ति में दुखी करता है रावण। कम्प्लेन पिछाड़ी कम्प्लेन दुख की। सतयुग में तो दुख की कम्प्लेन होती नहीं। ये ईश्वरीय गोद सबसे उत्तम है। जास्ती नहीं रह सकते हैं। सतयुग में चाहे जास्ती रहने तो रह न स(कते)। दुख में तो जास्ती रहना चाहेंगे नहीं।